युवा पाठकों के लिए प्रकृति की कहानियाँ

और उसने रास्ता दिखाया!

युवा पाठकों के लिए प्रकृति की कहानियाँ

और उसने रास्ता दिखाया!

विद्या और राजाराम शर्मा

हिंदी : अरविन्द गुप्ता

Vidya Online

A PARTNERSHIP FOR TEACHERS, CHILDREN AND EDUCATION

जून-जुलाई 2013 और मई-जून 2017 के बीच, दक्षिणी दिल्ली के एक आवासीय परिसर में किए गए अवलोकनों पर आधारित एक कहानी.

मोरनी ने 26 जून को अपना घोंसला बनाया और फिर 28 जुलाई को वो अपने चूज़ों को लेकर चली गई.

पुस्तक के फोटो शायद पक्षियों या उनके घोंसलों के वास्तविक आकार न दिखाएं.

AND SHE SHOWED THE WAY published by VIDYA ONLINE is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 Unported License (https://creativecommons.org/licenses/by-nc-sa/4.0/)

Permissions beyond the scope of this license may be available at admin@vidyaonline.org

http://vidyaonline.net

मैं एक झटके के साथ उठी. लगातार ऊँची और तेज़ आती पीप...पीप..पीप.. की आवाज़ ने मुझे जगाया. मैं भागकर बालकनी में गई और वहां मैंने जो कुछ देखा, उसे देखकर मैं हैरान रह गई.

"वो उन्हें त्याग रही है! वो उन्हें छोड़कर जा रही है," मैं चिल्लाई.

"चुप," मादा कबूतर फुसफुसाई.

"चुप रहो," नर कबूतर ने कहा.

उसकी पीप...पीप.. जारी रही, अधिक जोरदार और तीव्रता के साथ. वे तीनों चूज़े बुरी तरह से घबराए थे. उनमें से दो खतरनाक तरीके से धूप रोकने वाले छज्जे की किनार पर खड़े थे. वे सोच रहे थे कि उनकी माँ उन्हें भला छोड़कर क्यों चली गई थी.

मैंने वो सब बड़ी डरावनी निगाहों से देखा. अगर चूजे नीचे गिर गए तो क्या होगा? नीचे जमीन पर! एकदम नीचे!

उनकी माँ - मोरनी भी घबराई हुई थी. कुछ ही सेकंड में, उसने बड़ी जल्दबाजी में वापिसी की उड़ान भरी. फिर वो तीनों चूजों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा करके ऐसे बैठ गई जैसे कुछ हुआ ही न हो.

"ओह!" मैंने एक राहत की सांस ली.

हमारा मकान, घरों की एक कतार में स्थित है, और उसमें ग्राउंड और पहली मंजिल है. हमारे घर के एकदम सामने एक दीवार है, जो हमारे और दूसरे परिसर के जंगल को एक-दूसरे से अलग करती है. दोनों परिसरों में बहुत सारे पक्षियों रहते हैं. इनमें मोर और कबूतर शामिल हैं. कबूतर, घरों और इमारतों में हमारे साथ-साथ ही रहते हैं. वे घरों के रोशनदानों, खिड़कियों, छज्जों, यहां तक कि बिजली बल्बों के कांच के बड़े गुम्बदों में भी रहते हैं . जब कभी संभव होता, या जहाँ उन्हें अनुमति मिलती है, वे चले आते हैं.

मोर और मोरनी - वे खुद एक-दूसरे में मगन रहते हैं और हमारे पास आने में संकोच करते हैं. सबसे ज़्यादा हिम्मत वे सर्दियों में दिखाते हैं. तब वे दबे पांव हमारे बगीचे में आकर पत्ते खाते हैं - खासतौर पर मूली के पत्ते.

पर एक बड़ी अजीब बात थी. यह मोरनी उनमें से कुछ अलग थी. बिना किसी हिचकिचाहट के, उसने एक महीने से भी अधिक समय से, मेरी पड़ोसन के छज्जे पर कब्जा कर रखा था! वो पहली मंज़िल के कमरे की खिड़की का छज्जा था!

यह सब कुछ जून में एक दिन शुरू हुआ. मोरनी ने हमारे सभी घरों के छज्जों का मुआईना किया. पर हमारे पड़ोसी का घर ही उसे सबसे पसंद आया.

जहाँ तक मुझे याद है वो छज्जा, हमेशा से एक नर और मादा कबूतर का घर रहा था. वे वहाँ आराम करते थे. वो उनका बसेरा और घोंसला था. लेकिन मोरनी के लिए यह कुछ भी मायने नहीं रखता था. अनुमति की जहमत उठाए बिना, उसने उन सभी डंडियों और टहनियों पर कब्ज़ा किया जो नर कबूतर ने घोंसले के लिए इकट्ठी की थीं. किसी की कोई परवाह किए बिना, उसने बस यह घोषणा की कि वो उस छज्जे पर ही अपना घोंसला बनाएगी. बेचारा कबूतर परिवार! मुझे नहीं पता कि वो इससे खुश था या दुखी.

तभी मैंने देखा, मोरनी ने दूसरा प्रयास किया. वो ऊपर उठी, धीरे-धीरे छज्जे के किनारे पर गई और फिर फटाक से एक झटके में नीचे सड़क पर जाकर बैठ गई.

"देखो, वो दुबारा भाग रही है!" मैं फिर से चिल्लाई.

"चुप!"

वो नर टिटहरी (रेड वॉटल्ड लैपविंग) था! वो मुझे चुप रहने को कह रहा था! मैं खुले मुंह से उसे ताकती रह गई. मैं आश्चर्य से चौंक गई. वो छत पर तैनात खड़ा था. वहां वो अपने चूज़ों को किसी भी संभावित खतरे से बचाने के लिए चौकन्ना होकर खड़ा था.

उसके दो चूज़े, सड़क के दूर छोर पर बगीचे में घूम रहे थे. माँ टिटहरी उनके साथ थी. लेकिन वहाँ ज़मीन पर खड़े रहकर वो किसी आने वाले खतरे को देख नहीं सकती थी.

शायद यह प्रकृति का नियम है कि टिटहरियों के पास, अन्य प्राणियों के लिए बिल्कुल समय नहीं होता है. खासतौर पर जब वे अपने चूज़ों की देखभाल कर रहे हों. और यहाँ पर नर टिटहरी मुझे डांट रहा था! नर टिटहरी ने मेरी उलझन को देखा और ज़ोर से कहा, "उसे परेशान मत करो, उसे अच्छी तरह पता है कि वो क्या कर रही है."

"तुम्हारा मतलब है मोरनी को अपने चूज़ों को छोड़कर दूर चले जाना चाहिए?"

नर टिटहरी जो कुछ कह सकता था वो उसने कहा. उसके बाद उसने मुझ में और रूचि नहीं दिखाई. अब मुझे खुद ही मोरनी की अगली योजना के बारे में पता लगाना था.

मैं मोरनी को बैठे हुए देखने की आदी हो चुकी थी. वो लगभग एक ही स्थिति में बैठकर अपने अंडे सेती थी. वो चार बड़े, बहुत चमकदार नहीं, पर क्रीम रंग के अंडे थे. खुद को ठंडा रखने के लिए उसका मुँह हमेशा खुला रहता था और उसकी छोटी जीभ ऊपर-नीचे होती रहती थी. वो हर समय सतर्क रहती थी, हालाँकि वो बीच-बीच में झपकी भी ले लेती थी. शुरू-शुरू में वो देर शाम को उड़ जाती थी और फिर अगली सुबह ही लौटकर आती थी. लेकिन जल्द ही वो दिन-रात बैठकर अपने अंडे सेने लगी. वो बिना भोजन और पानी के वहां बैठी रहती थी.

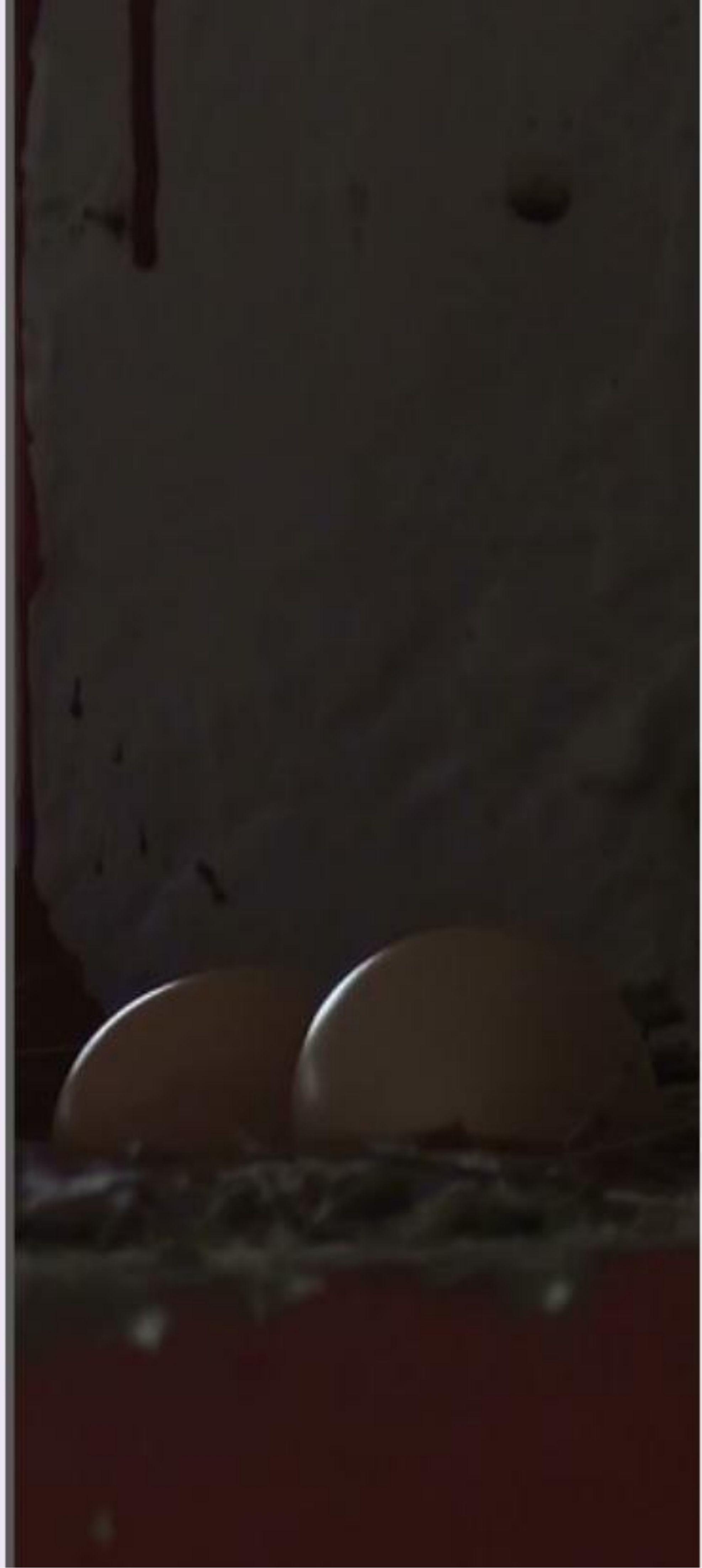

पड़ोसन ने जो थोड़ा खाना उसके लिए छज्जे में फेंका, वो भी उसने नहीं छुआ. वो किसी से एक शब्द भी नहीं बोलती थी, कबूतरों से भी नहीं.

परसों मुझे पहली बार मोरनी का एक चूज़ा नज़र आया. अरे, वो कितना प्यारा था! वो मोरनी के विशाल पंखों के नीचे से झांक रहा था! जल्द ही उसने अपना साहस बंटोरा. फिर वो मोरनी के ऊपर कूदकर, उसके पंख और कलगी खींचने लगा. इन शरारतों में उसे बड़ा मज़ा आता. कल सुबह मुझे दूसरा और शाम तक तीसरा चूज़ा देखने को मिला. लेकिन चौथा चूज़ा कहीं गायब था!

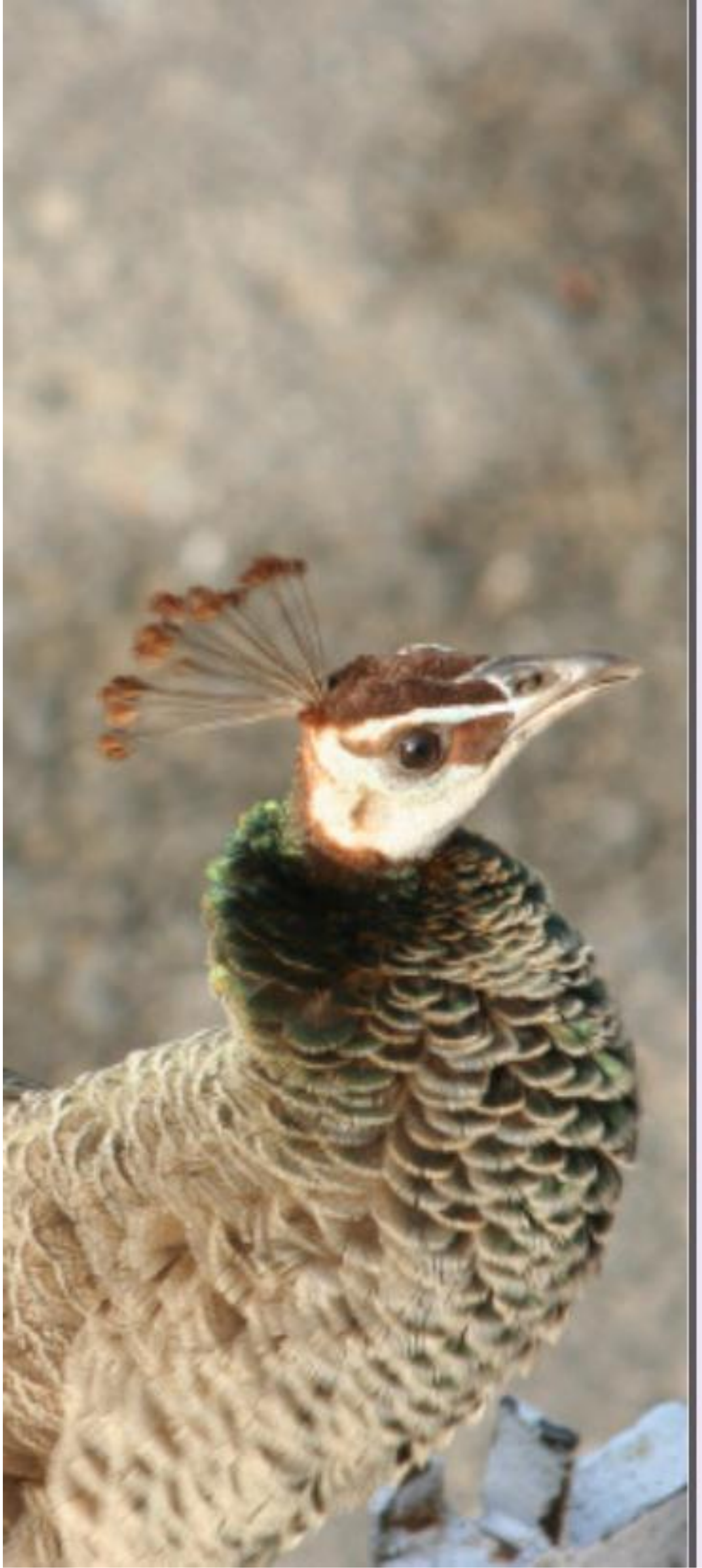

अचानक, मोरनी के दिमाग में एक नया विचार आया. वो तुरंत नीचे उड़कर सड़क पर गई, और वहां से अपने चूज़ों को ताकने लगी. क्या वो चूज़ों से दूर जाना चाहती थी? अब ... इतने दिनों के बाद? क्या वो चाहती थी कि चूज़े उसके पीछे-पीछे आएं? पर कैसे? वो मुझे कुछ पता न था.

"वो क्या कर रही है?” मैंने आश्चर्य और थोड़ी चिंता से पूछा.

"वो चूज़ों को रास्ता दिखा रही है. चूज़ों को उस रास्ते ही जाना होगा. अब उनके जाने का समय आ गया है," नर कबूतर ने शांति से कहा.

"अरे देखो! अभी वे इतने छोटे हैं. वे भला कैसे जाएंगे? मुझे पता है कि मोरनी ने तुम्हें बेघर किया है ... लेकिन ... तुम इतने स्वार्थी क्यों हो?" मैंने हताश होकर पूछा.

"स्वार्थी! और मैं! आप किस की बात कर रही हैं? उन्हें जाना ही होगा. टिटहरियों की तरह ही," उसने फिर बहुत शांत भाव में कहा.

"टिटहरी?" मैंने हैरान होकर पूछा.

"हाँ, हमारी छत के ऊपर की टिटहरियों के चूज़ों की तरह," मादा कबूतर ने कहा.

टिटहरियां? छत के ऊपर? कबूतर किस के बारे में बात कर रहा था?
यह सुनकर मैं अचंभित हुई.

"देखो टिटहरियां और मोर सभी जमीन पर अपने घोंसले बनाते हैं," मादा कबूतर ने खुद से बातें करते हुए कहा.

"क्या?"

"उन दोनों में बस एक अंतर है. टिटहरियां अपना घोंसला खुले में बनाती हैं लेकिन मोरनी अपने घोंसले के लिए हरी घास वाले मैदान के पास किसी घनी झाड़ी को चुनती है."

"क्या?" मैंने पूछा. मैंने बहुत सारी टिटहरियों के घोंसले देखे थे और मुझे लगता था कि मैं उनके बारे में सब कुछ जानती थी.

उनके अंडे पत्थरों की तरह दिखते हैं और उनके घोंसले में अच्छी तरह से छलावरण (Camouflage) होता है. उनके अंडे और चूज़े दोनों पूरी तरह से छिपे होते हैं. यह सच था, कि मैंने पहली बार किसी मोरनी को घोंसला बनाते हुए देखा था. लेकिन उसके घोंसले में न तो अंडे और न ही चूज़े छलावरण से छिपे थे! इसके अलावा, अगर मोरनी ज़मीन पर अपना घोंसला बनाती थी, तो फिर वो यहां छज्जे पर क्या कर रही थी?

"... ताकि जैसे ही चूज़ों के पंख सूखें और वे चलने लगें वैसे ही मोरनी चूजों को कहीं दूर ले जा सके, जहां वे अपना भोजन ढूंढ सकें. लेकिन ... अब ... सुरक्षित खुले मैदान कहाँ बचे हैं और अब घनी झाड़ियां भी कहाँ हैं?" मादा कबूतर ने अपनी बात जारी रखी. उसकी आवाज़ में एक स्पष्ट गुस्से का भाव था.

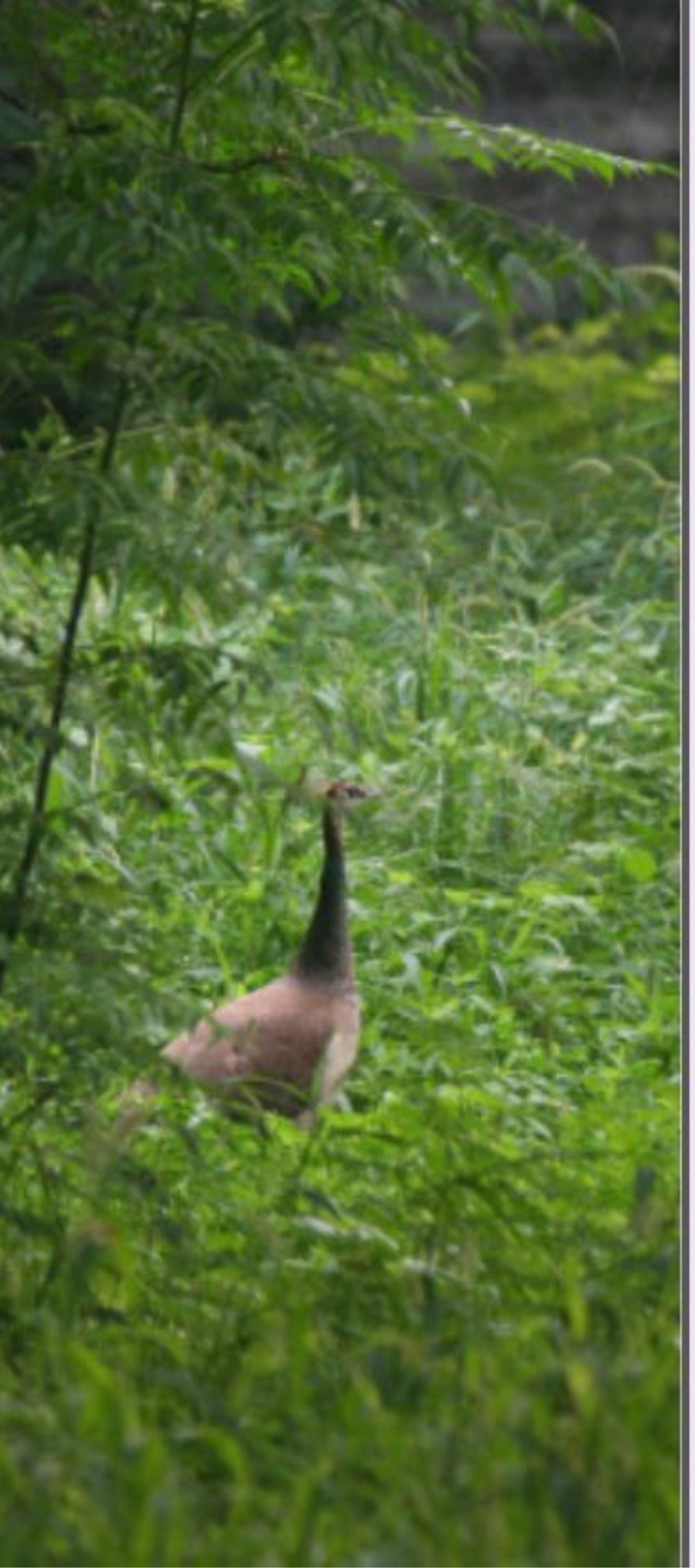

अब मैं मादा कबूतर की बात समझने लगी थी. मैं जानती थी - घोंसले के लिए एक अच्छी जगह का चयन, कितना महत्वपूर्ण था. पक्षी घोंसले बनाने और अपने अंडों और चूजों की रक्षा करने में बहुत अधिक ऊर्जा और प्रयास लगाते हैं. हालांकि, कई बार वे बहुत भाग्यशाली नहीं होते हैं. खासकर शहरी इलाकों में.

एक दिन कहीं पर एक झाड़ी होती है, पर अगले दिन उसकी छंटनी हो जाती है. एक दिन कहीं एक पेड़ होता है, जिसकी डाल पर घोंसला होता है पर अगले ही दिन उस शाख को काट दिया जाता है. और जब किसी बियाबान स्थान में घास बहुत अधिक ऊंची हो जाती है, तो तुरंत ही किसी सफाई अभियान में उसे काट दिया जाता है! इस तेज़ी से होते बदलाव में, भला पक्षी अपने घोंसले कैसे बनाएंगे? रही आवारा कुत्तों की बात - उनकी संख्या हमेशा बढ़ती ही रहती है!

क्या ज़मीन पर घोंसला बनाने वाले पक्षियों के पास कोई और विकल्प था? यह सभी बातें मुझे बहुत उदास कर रही थीं.

"ज़रा खुश हो! कुछ मुस्कुराओ! यह दुनिया का अंत नहीं है. पक्षियों ने कुछ नए गुर भी सीखे हैं!" नर कबूतर ने बड़ी विनम्रता से कहा. "उन्होंने परिस्थितियों के अनुसार खुद को ढाला है."

तब मुझे पता चला कि टिटहरी की जोड़ी ने, मेरे दूसरे पड़ोसी की ढाल वाली छत पर अपना घोंसला बनाया था. और वो ऐसा सालों से कर रही थी. कई टिटहरियाँ अब "ऊंचाई" पर घोंसले बनाने लगी थीं! मोरनी की तरह, वे भी अपने अंडे लगभग एक महीने तक सेती थीं, आमतौर पर 28 दिनों तक. उनके अंडों के लिए छत बड़ी सुरक्षित थी.

"अरे! अब मुझे तुम्हारी पूरी बात समझ में आई!" मैं ख़ुशी से चिल्लाई. फिर मैंने कबूतरों को बताया कि नीचे बगीचे में टिटहरियों के चूज़ों को देखकर मैं कितनी हैरान और आश्चर्यचकित हुई थी. समय के साथ-साथ मैं घोंसलें खोजने में एक विशेषज्ञ बन गई थी. क्योंकि मैंने उनकी आवाज़ छत पर सुनी थी इसलिए मैंने यह कभी नहीं सोचा था कि उन्होंने छत पर अपना घोंसला बनाया होगा!

"हाँ ... देखो ... ! क्या वे चतुर नहीं हैं?” मादा कबूतर ने पूछा.

छत पर घोंसला बनाने वाले पक्षी अपने चूज़ों को जल्द-से-जल्द ज़मीन पर लाने की बात सोचते हैं, ताकि वहां वे अपने लिए भोजन खोज सकें. अब मुझे मोरनी और चूज़ों को परेशान न करके बस शांति से इंतज़ार करना था. आगे क्या होगा उसकी धैर्य से प्रतीक्षा करनी थी. चूज़े, ऊपर से नीचे, पूरी एक मंज़िल कैसे उतरेंगे? मोरनी के चूज़ों को - छत से ज़मीन तक आना आसान न होगा. क्या वे छलांग लगाएंगे? वो यह मुश्किल काम कैसे करेंगे? निश्चित रूप से वो काम बहुत जोखिम भरा होगा.

मिनट बीतते गए. उसके बाद पूरा एक घंटा बीता. उतने समय में, मोरनी ने नीचे से ऊपर के कुल सोलह चक्कर लगाए! वो नीचे उड़ी, शायद एक प्रदर्शन करने के लिए. पर जैसे ही वो गई, चूज़े घबराकर अपनी माँ को ज़ोर-ज़ोर से पुकारने लगे. क्लक!... क्लक!... वह नीचे से पुकारती, और चूज़ों से नीचे आने का आग्रह करती.

लेकिन चूज़े ऊपर ही अड़े बैठे रहे. मोरनी अपने चूज़ों को देखती, फिर वो हम छह लोगों को देखती जो बालकनी में खड़े-खड़े उसे बेफिक्री से देख रहे थे. मोरनी असहाय थी. अब वो बेचारी वापिस आने के अलावा कुछ और कर भी नहीं सकती थी. वो बार-बार जल्दबाजी में एक अनाड़ी की तरह वापिस लौटती थी. एक बार वो अपना संतुलन खो बैठी, और फिर वो खुद पर बहुत नाराज हुई. उसके लिए यह सब बहुत थकान का काम होगा.

"अरे देखो!" मैं खुद को रोक न पाई और ज़ोर से चिल्लाई.

तभी अचानक एक चूजा नीचे कूदा! अकस्मात, किसी एक्सीडेंट से! यह सब कुछ पलक झपकते हुआ. वो नीचे घास पर सुरक्षित जाकर उतरा. एक छोटी सफलता! लेकिन अब अधिक फ़िक्र की बात थी. चूज़ों को नीचे-ऊपर देखकर, मोरनी की चिंता और बढ़ गई. सौभाग्य से मोरनी के दूसरे चूज़े ने हिम्मत की और कुछ मिनटों के बाद वो बड़े करीने से नीचे कूदा. वो आधा कूदा और उसने आधी उड़ान भरी!

उसके बाद फिर से मुसीबत शुरू हुई. मोरनी अपने नीचे के दोनों चूजों के पास से नहीं हिली और तीसरा चूज़ा नीचे नहीं कूदा. माँ नीचे से क्लॉक क्लॉक की आवाज़ें करती... और छोटा चूज़ा ऊपर से पीप! पीप! की आवाज़ करता. हताशा में दोनों, एक-दूसरे को बुला रहे थे. मोरनी के रास्ते से बाहर होने के बाद, हम लोगों ने जल्दी से एक सीढ़ी लगाई और फिर तीसरे चूज़े को सुरक्षित नीचे लाए.

फिर कुछ देर बाद बड़ी राहत के साथ, हमने मोरनी को बाहर जाते हुए देखा. उसके तीनों चूज़े उसके पीछे-पीछे चल रहे थे और अपनी माँ की चाल से तालमेल बनाए रखने की पूरी कोशिश की रहे थे. धीरे-धीरे वे हमारे गेट से बाहर निकले और हमारे पड़ोसी परिसर के जंगल में चले गए.

और वो चौथा बचा हुआ अंडा? वो हमारे लिए एक यादगार बन गया. वो हमें हमेशा मोरनी की याद दिलाता रहा - कैसे उसने इतनी दृढ़ता से अपने चूज़ों को रास्ता दिखाया.

समाप्त

Vidya Online

A PARTNERSHIP FOR TEACHERS, CHILDREN AND EDUCATION

Visit http://vidyaonline.net for more titles